विराट दर्शन

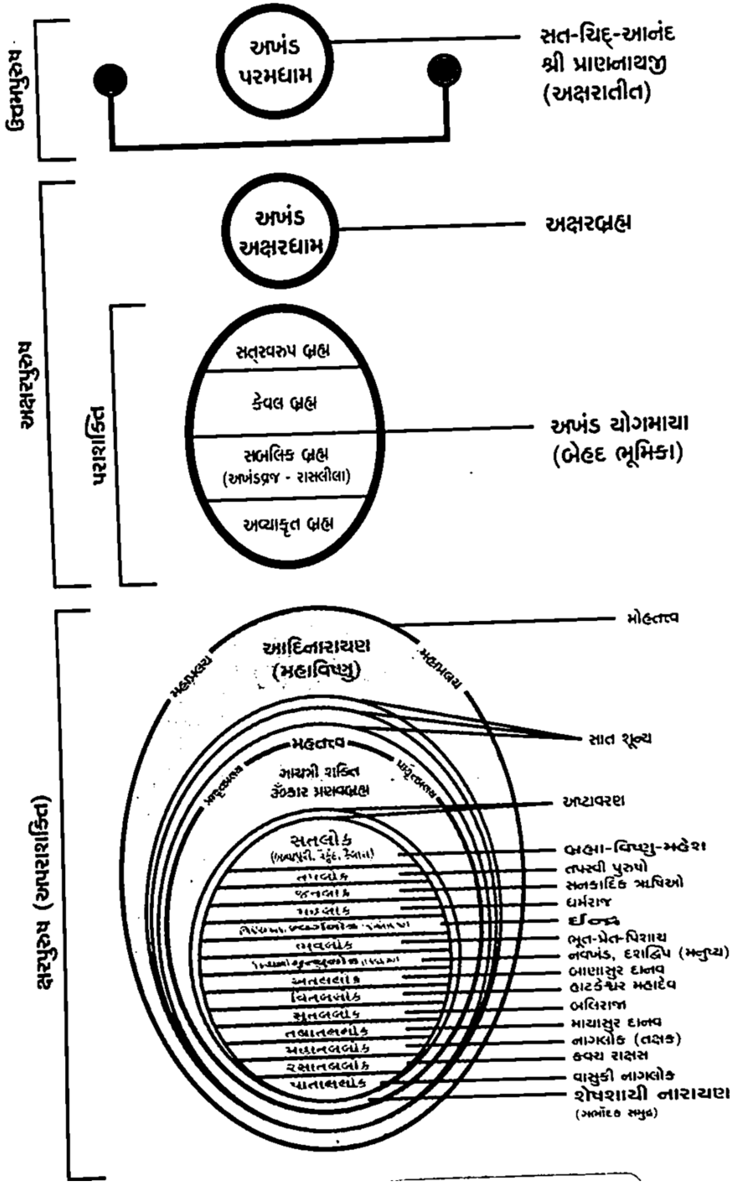
ઉત્તમપુરુષ
અખંડ પરમધામ
સત-ચિદ્-આનંદ
શ્રી પ્રાણનાથજી
(અક્ષરાતીત)
અક્ષરપુરુષ
અખંડ અક્ષરધામ
અક્ષરબ્રહ્મ
પરાશક્તિ
સત્સ્વરુપ બ્રહ્મ
કેવલ બ્રહ્મ
સબલિક બ્રહ્મ
(અખંડવ્રજ - રાસલીલા)
અવ્યાકૃત બ્રહ્મ
અખંડ યોગમાયા
(બેહદ ભૂમિકા)
ક્ષરપુરુષ (અપરાશક્તિ)
મોહતત્ત્વ
આદિનારાયણ
(મહાવિષ્ણુ)
મહાપ્રલય
મહાપ્રલય
સાત શૂન્ય
મહતત્ત્વ
ગાયત્રી શક્તિ
ૐકાર પ્રણવબ્રહ્મ
અષ્ટાવરણ
સતલોક
તપલોક
જનલોક
અતલલોક
વિતલલોક
સુતલલોક
તલાતલલોક
મહાતલલોક
રસાતલલોક
પાતાલલોક
બ્રહ્મા-વિષ્ણુ-મહેશ
તપસ્વી પુરુષો
સનકાદિક ઋષિઓ
ધર્મરાજ
ઈન્દ્ર
ભૂત-પ્રેત-પિશાચ
નવખંડ, દશદ્વિપ (મનુષ્ય)
બાણાસુર દાનવ
હાટકેશ્વર મહાદેવ
બલિરાજા
માયાસુર દાનવ
નાગલોક (તક્ષક)
કવચ રાક્ષસ
વાસુકી નાગલોક
શેષશાયી નારાયણ

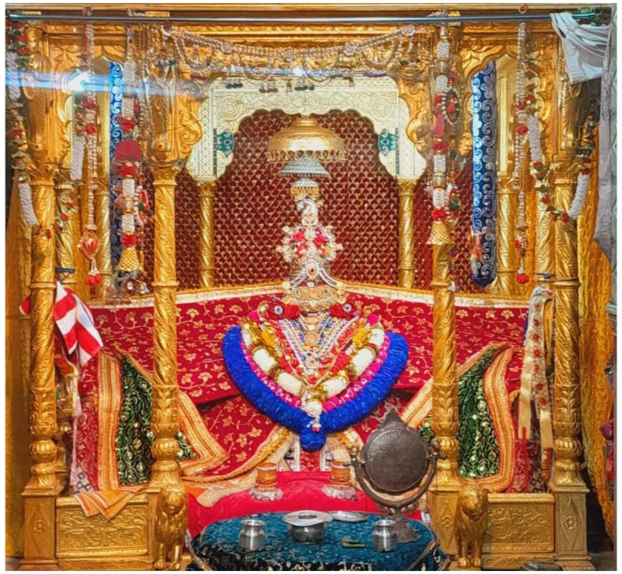

विराट दर्शन

Vando Sat-Guru Charan Ko,
Karun So Prem Pranam |
Asubh Haran Mangal Karan,
Dhani Shri Dev-Chandra Ji Naam ||1

Shri Pran-Nath Nij Mool Pati,
Shri Mihiraj Su-Naam |
Tej-Kuvari Shyama Yugal Ko,
Pal Pal Karun Pranam ||2

Shri Pran-Nath Toom Satya Ho,
Toom Se Chalat Jahaaj |
Mein Aadhin Karni Nahin,
Baanha Grahey Ki Laaj ||3

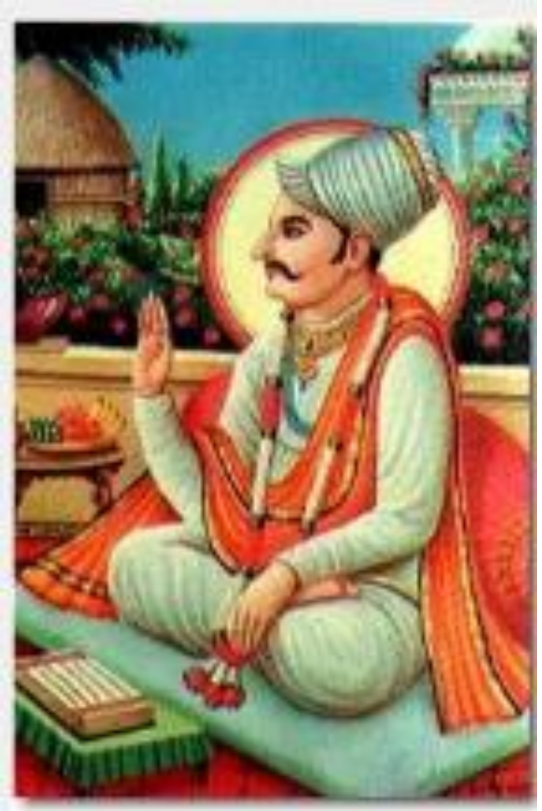

अक्षरातीत ब्रमाद
उतम पुरुष

अक्षर ब्रमाद

क्षर ब्रमाद

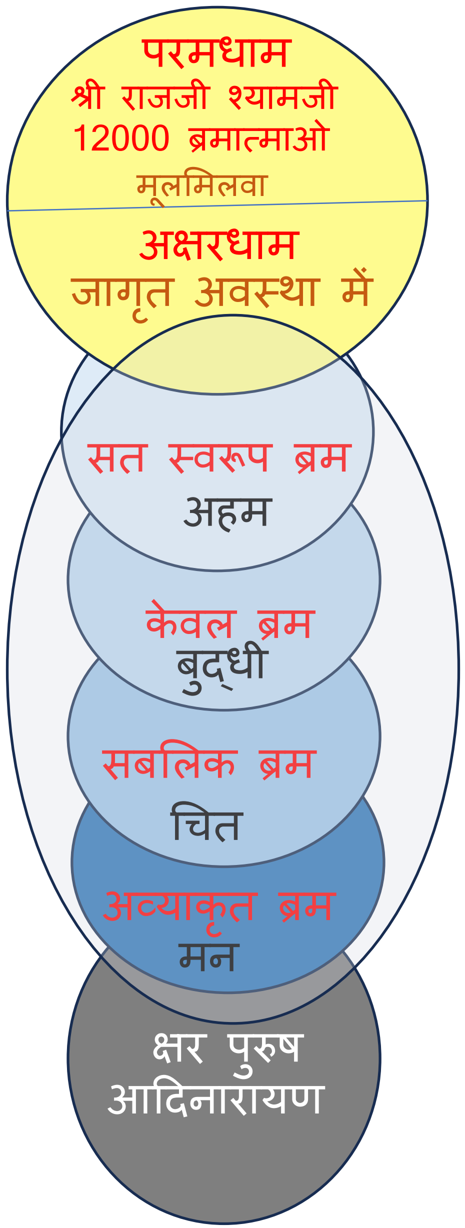

अक्षरातीत ब्रमाद
उतम पुरुष

परमधाम

अद्वेत

श्री राजजी श्यामजी
12000 ब्रमात्माओ

मूलमिलवा

अक्षरधाम

जागृत अवस्था में

विराट दर्शन - अक्षर ब्रमाद , अक्षर ब्रम का अंतस्करन

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

अक्षरातीत ब्रमाद उतम पुरुष

अक्षर ब्रमाद

क्षर ब्रमाद

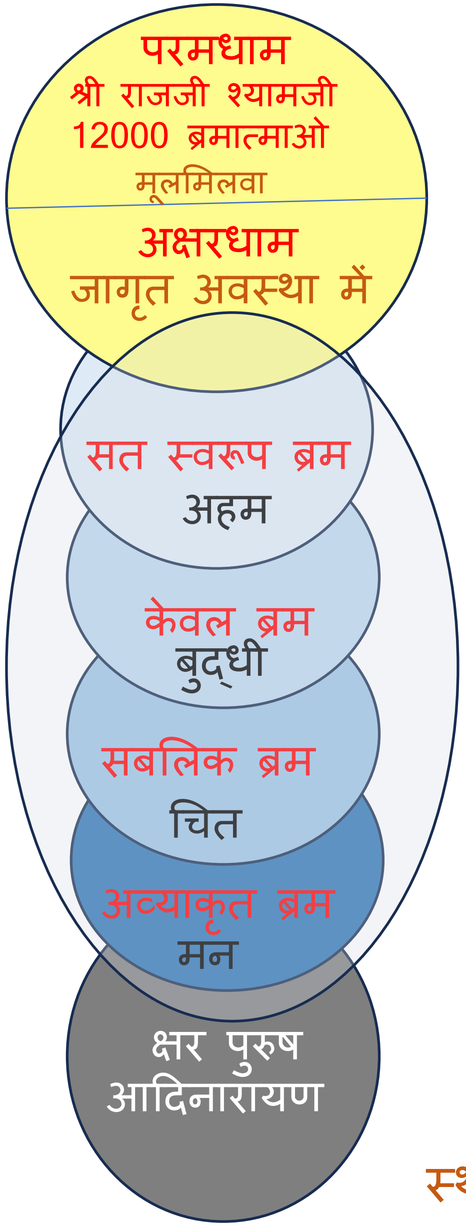

- अक्षरब्रम ध्यान अवस्था के चार अंत:करण क्या है ?
- शास्त्रों में इसे क्या कहा जाता है ?
- शरीर और स्थान का नाम क्या कहा जाता है ?

शास्त्रों में	अंत:करण	शरीर और स्थान	
		निर्मल चेतन	Pure universal consciousness
सत स्वरूप ब्रम	अहंकार	महाकारन	Great Causal
केवल ब्रम	बुद्धि	कारण (प्रकृति)	Causal State - the source or seed from which the subtle and gross creation emerge.
सबलिक ब्रम	चित	सूक्षम (जीव)	Subtle energies behind creation जो प्रत्यक्ष न दिखाई दे, पर जिसका अनुभव या बोध हो
अव्याकृत ब्रम	मन	स्थूल (शरीर)	Visible universe जो दिखाई दे

स्थूल (Sthūl) → सूक्षम (Sūkṣma) → कारण (Kāraṇ) → महाकारन (Mahākāraṇ)

अक्षर ब्रमाद

निर्मल चेतन

सत स्वरूप ब्रम
अहंकार
महाकारन

केवल ब्रम
बुद्धि
कारन

सबलिक ब्रम
चित
सूक्षम

अव्याकृत ब्रम
मन
स्थूल

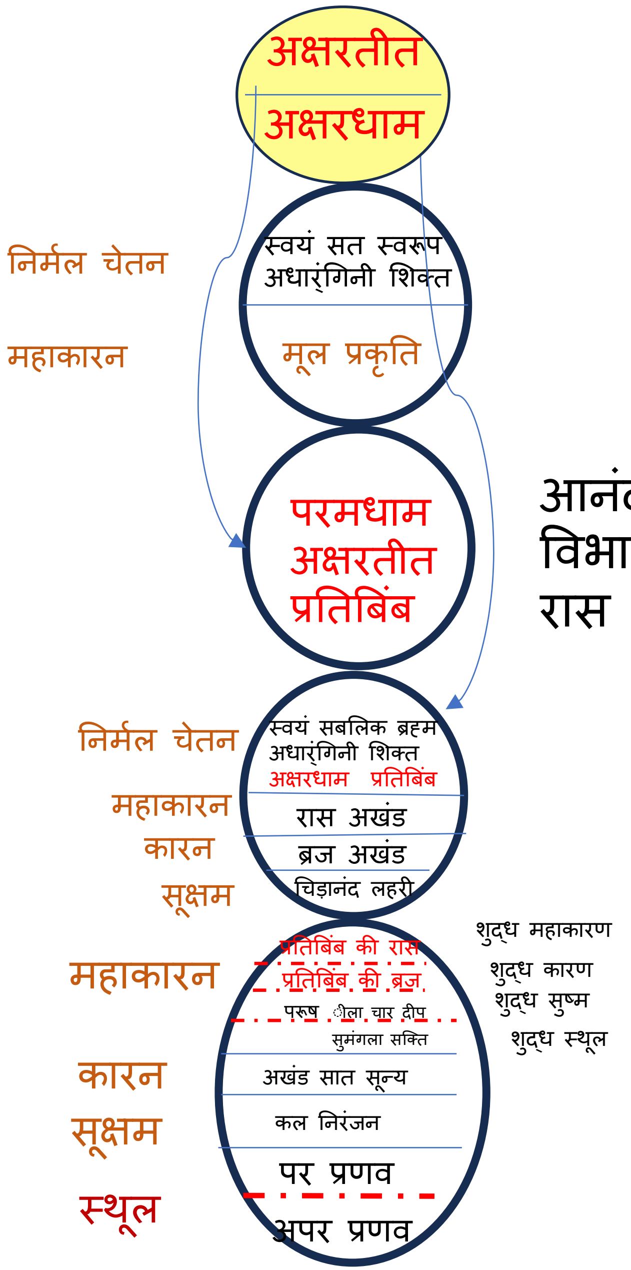

आनंद में
विभाजन नहीं है
रास लीला

विराट दर्शन - अक्षर ब्रम का अंतस्करन

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

सत स्वरूप ब्रम
अहंकार

निर्मल चेतन

महाकारन

केवल ब्रम
बुद्धि

सबलिक ब्रम
चित

निर्मल चेतन

महाकारन

कारन

सूक्षम

अव्याकृत ब्रम
मन

महाकारन

कारन

सूक्षम

स्थूल

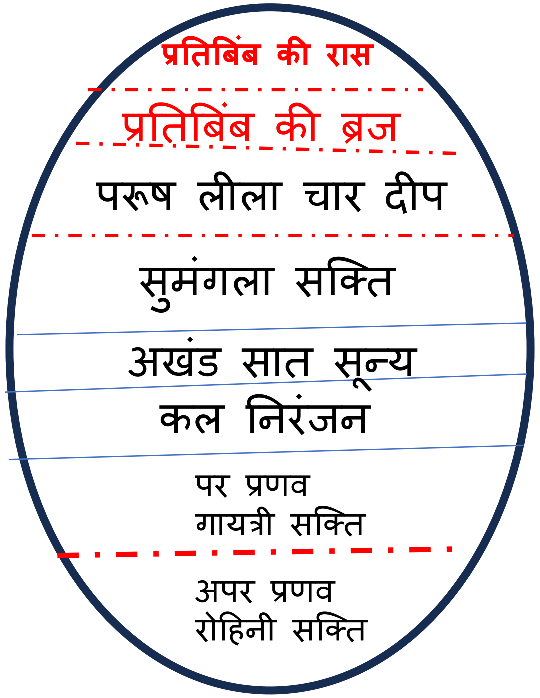

सत स्वरूप ब्रम
अहंकार

सत चिद आनंद

निर्मल चेतन

महाकारन

विराट दर्शन - अक्षर ब्रम का अंतस्करन , केवल ब्रम एवं सबलिक ब्रम

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

अक्षर ब्रमाद

अक्षरातीत ब्रमाद

केवल ब्रम
बुद्धि - आनंद

आनंद में विभाजन नहीं है

परमधाम
अक्षरतीत
प्रतिबिंब
रास लीला

निर्मल चेतन	स्वयं सबलिक ब्रहम अधारंगिनी शिक्त **अक्षरधाम प्रतिबिंब**
महाकारन	**रास अखंड**
कारन	ब्रज अखंड
सूक्षम	चिड़ानंद लेहरी

सबलिक ब्रम
चित

चिड़ानंद लेहरी

- शिव रूपी पाया & प्रमशिवरूपी पलंग'(प्रणव कि पाँच'शक्ति
- मूल चिड़ानंद लेहरी की आनंद लीला –अखंड रास एवं ब्रीज लीला
- मूल चिड़ानंद लेहरी कि प्रकृति लीला - सुमंगला सक्ति के रुप में अव्याकृत ब्रम के महाकारण में प्रगत

विराट दर्शन - अक्षर ब्रम का अव्याकृत ब्रम

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

अव्याकृत ब्रम
मन

महाकारन

कारन

सूक्षम

स्थूल
प्रणव

शुद्ध महाकारण
प्रतिबिंब की रास

शुद्ध कारण
प्रतिबिंब की ब्रज

शुद्ध सुष्म
परूष लीला चार दीप

शुद्ध स्थूल
सुमंगला सक्ति

अखंड सात सून्य

काल निरंजन

पर प्रणव
गायत्री सक्ति

अपर प्रणव
रोहिनी सक्ति

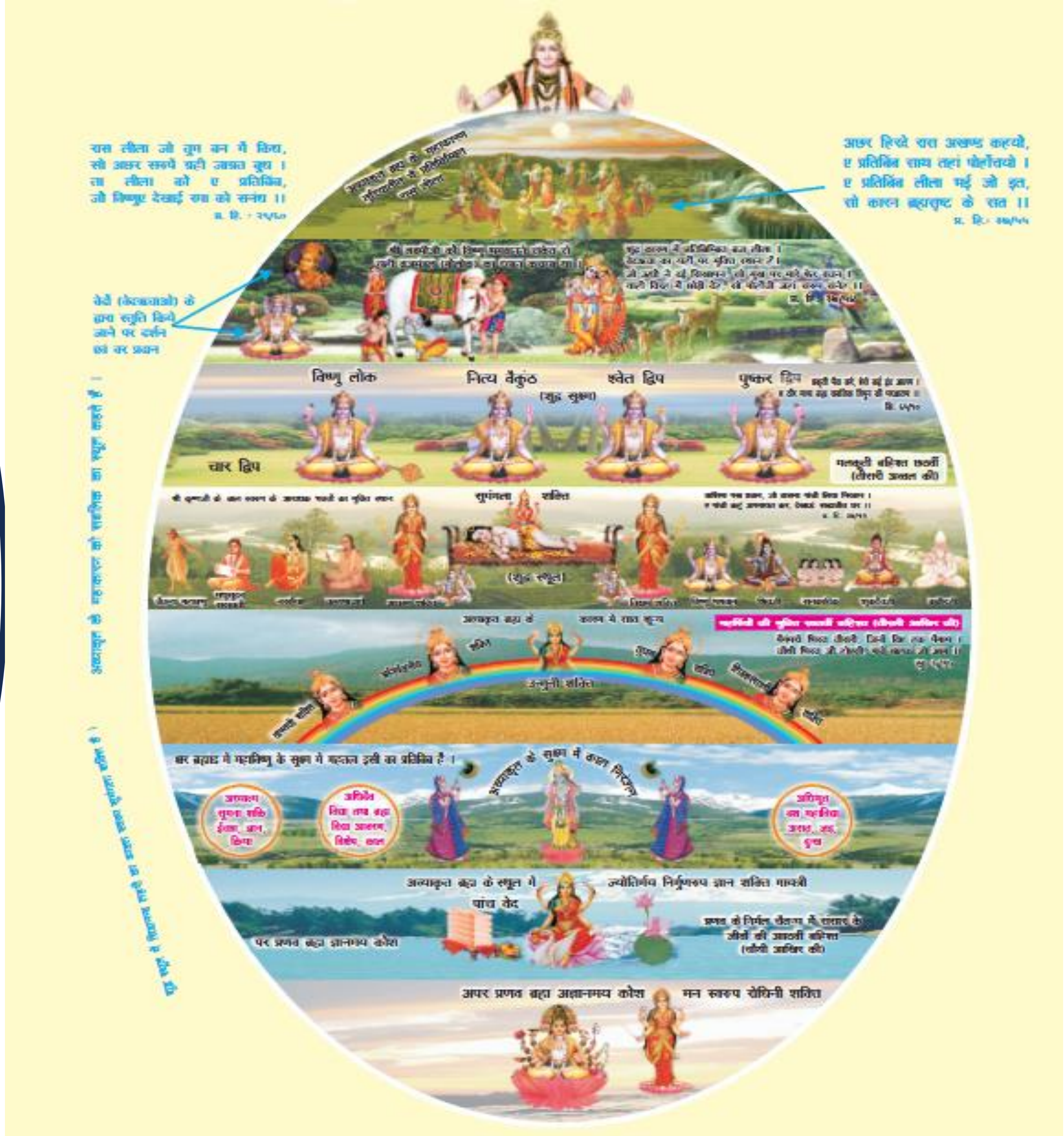

विराट दर्शन - अक्षर ब्रम का अव्याकृत ब्रम

अव्याकृत ब्रम
मन - सत

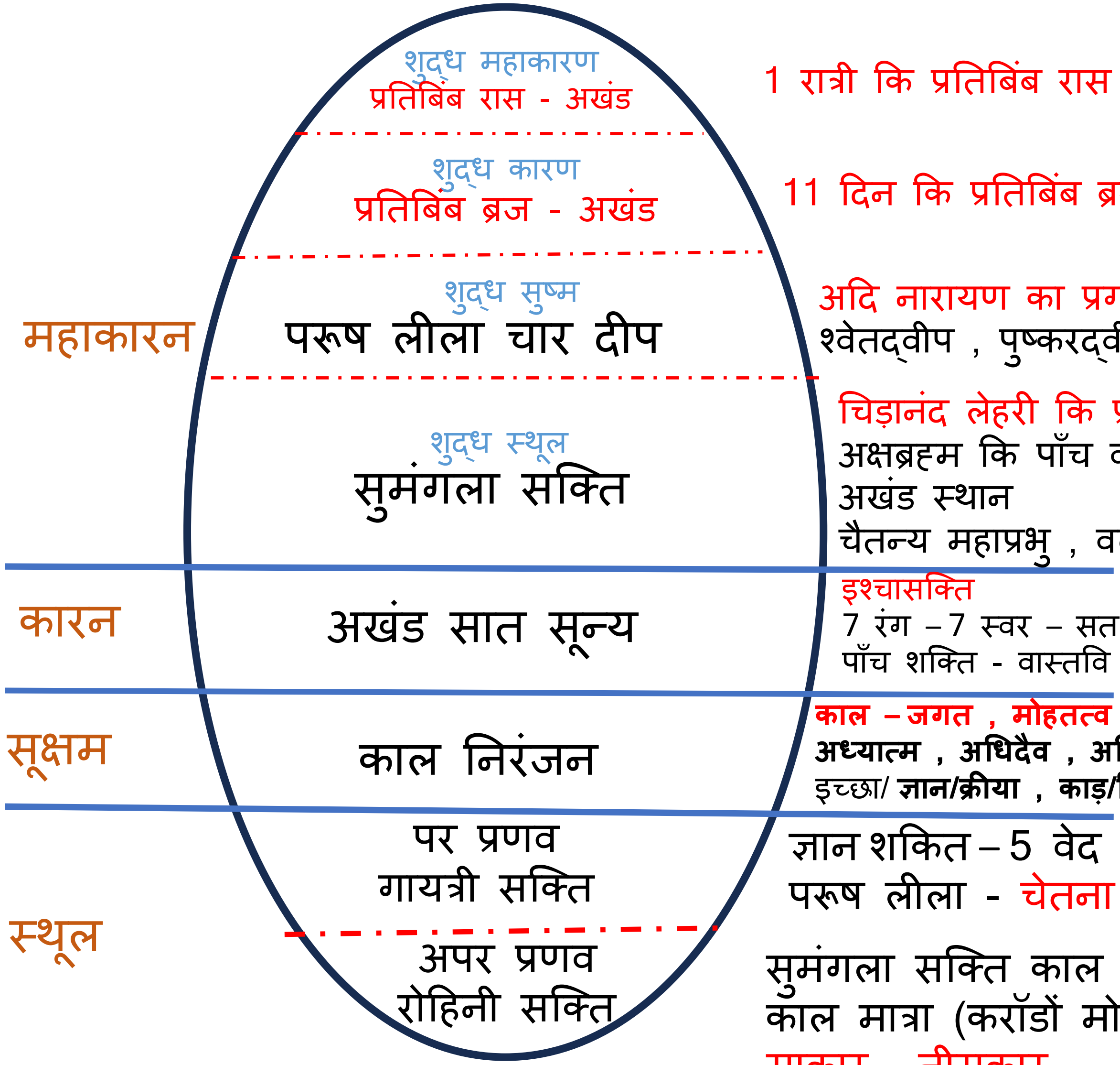

1 रात्री कि प्रतिबिंब रास लीला , 28th कलयुग , अखंड

11 दिन कि प्रतिबिंब ब्रज लीला , 28th कलयुग , अखंड

प्रकृति पैदा करे , अेसे कई इंड आलम |
ए ठोर माया ब्रहम सबलिक त्रिगुन कि परआतम ||

अदि नारायण का प्रगटन एवं मुक्ति स्थान
श्वेतद्वीप , पुष्करद्वीप, सत्यलोक - नित्य वैकुंठ , विष्णुलोक

चिड़ानंद लेहरी कि प्रकृति स्वभाव
अक्षब्रह्म कि पाँच वासना – शुकदेवजी , कबीरजी , शिवजी , महाविष्णु , सनकादिक के अखंड स्थान
चैतन्य महाप्रभु , वल्लभाचार्य, नरसैया मुक्ति स्थान

इश्चासक्ति
7 रंग – 7 स्वर – सत स्वर , eternal divine voice, (सा रे ग म प ध नि धा)
पाँच शक्ति - वास्तवि , अनिवर्चनीय , तुच्छा , शिव कल्याणी , उन्मुनी

काल – जगत , मोहतत्व
अध्यात्म , अधिदैव , अधिभूत
इच्छा/ **ज्ञान/क्रीया , काड़/विक्षेप/आवरण , असत/जड़/दुख**

ज्ञान शकित – 5 वेद
परूष लीला - चेतना

सुमंगला सक्ति काल की प्रतिनिधि
काल मात्रा (करॉडों मो अंश)
साकार – नीराकार
15 दिन **साकार रूप** सृष्टि बनती है , 15 दिन **निराकार रूप** सृष्टि का प्रलय

विराट दर्शन- अक्षर ब्रम का अव्याकृत ब्रम,मन, ओंकार (ॐ)

ॐ कि शक्ति का मूलस्थान **अव्याकृत ब्रम के स्थूल में - पाच शक्ति**

अव्याकृत ब्रम
मन

ॐ (या *Aum*/ओम) हिंदू धर्म का सबसे पवित्र प्रतीक, ध्वनि और मंत्र.

त्रिदेव का प्रतिनिधित्व: 'A' ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता), 'U' विष्णु (संरक्षक) और 'M' शिव (विनाशक/परिवर्तनकर्ता) का प्रतीक.

प्रणव: पाच , - पंच शक्ति - ॐ "प्रणव" भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि यह जीवन की प्राण-शक्ति (prana) में स्पंदित होता है

	ॐ की पाच शक्ति				
अव्याकृत ब्रम के स्थूल	5 मात्रा	5 तत्व	5 तनमात्र	5 देवता	5 वेद
शुद्ध निर्मल चेतन	●	आकाश	राग	सदासिव	स्वसंम वेद
शुद्ध महाकरण	‿	वायु	स्पश	इस्वर	अथवरवेद
शुद्ध कारण	म	अग्नि	रुप	रुद्र	सामवेद
शुद्ध सुष्म	उ	जल	रस	विष्णु	यजुर्वेद
शुद्ध स्थूल	अ	पृथ्वी	गंध	ब्रमा	ऋगवेद

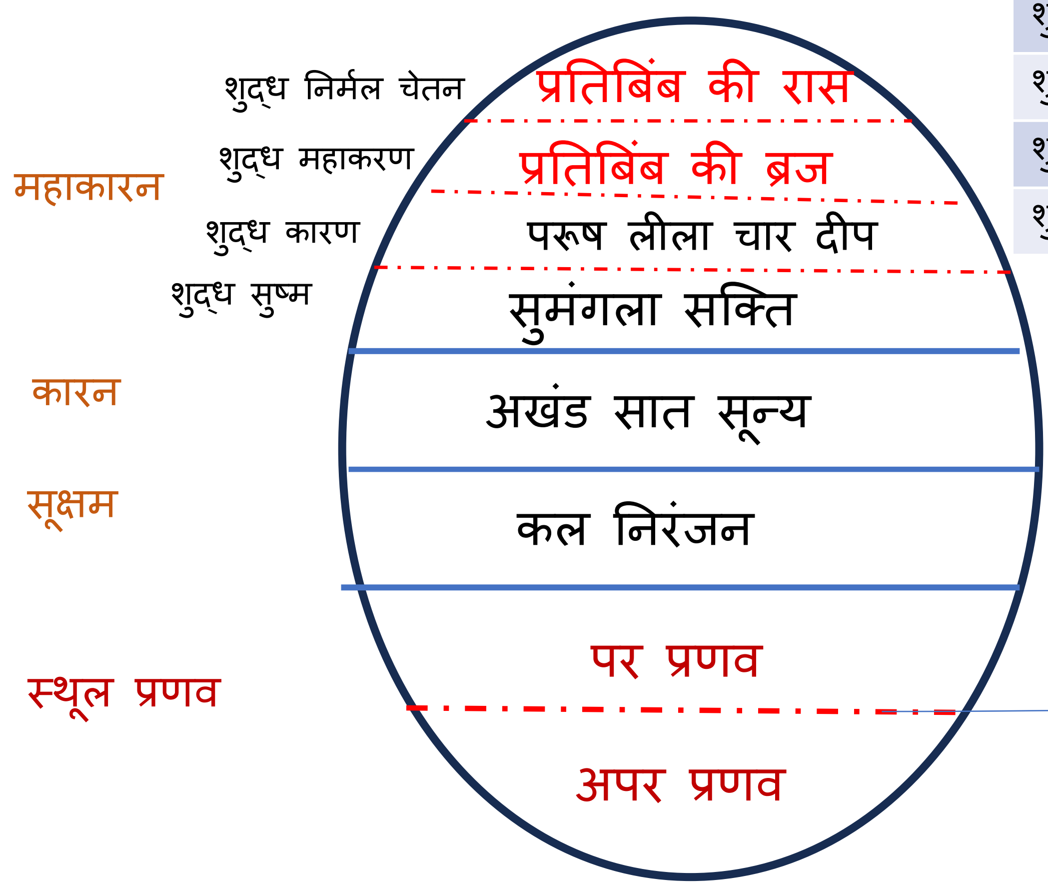

ॐ (pronounced as **AUM - अउम**)

ॐ

अव्याकृत ब्रम
मन
स्थूल प्रणव

प्रणव
पाच शक्ति
ॐ कार प्रणव ब्रह्म
पाच मात्रा

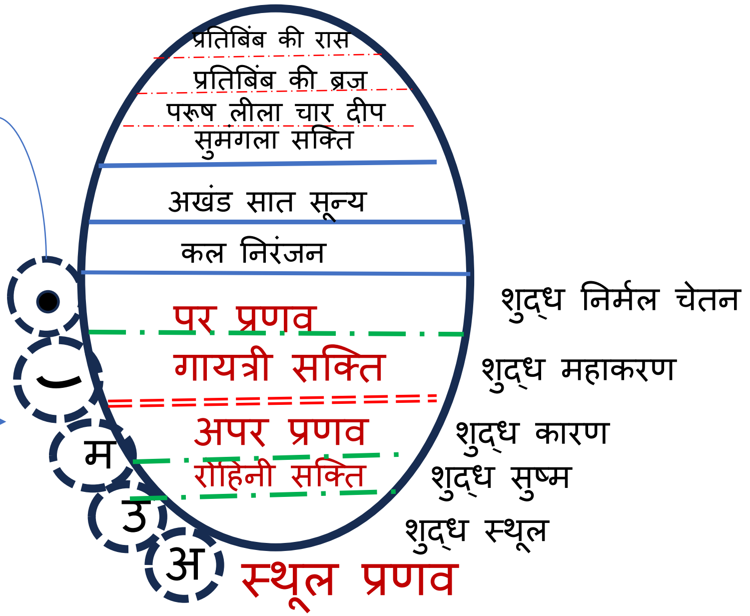

विराट दर्शन - Creation of क्षर ब्रह्मांड

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

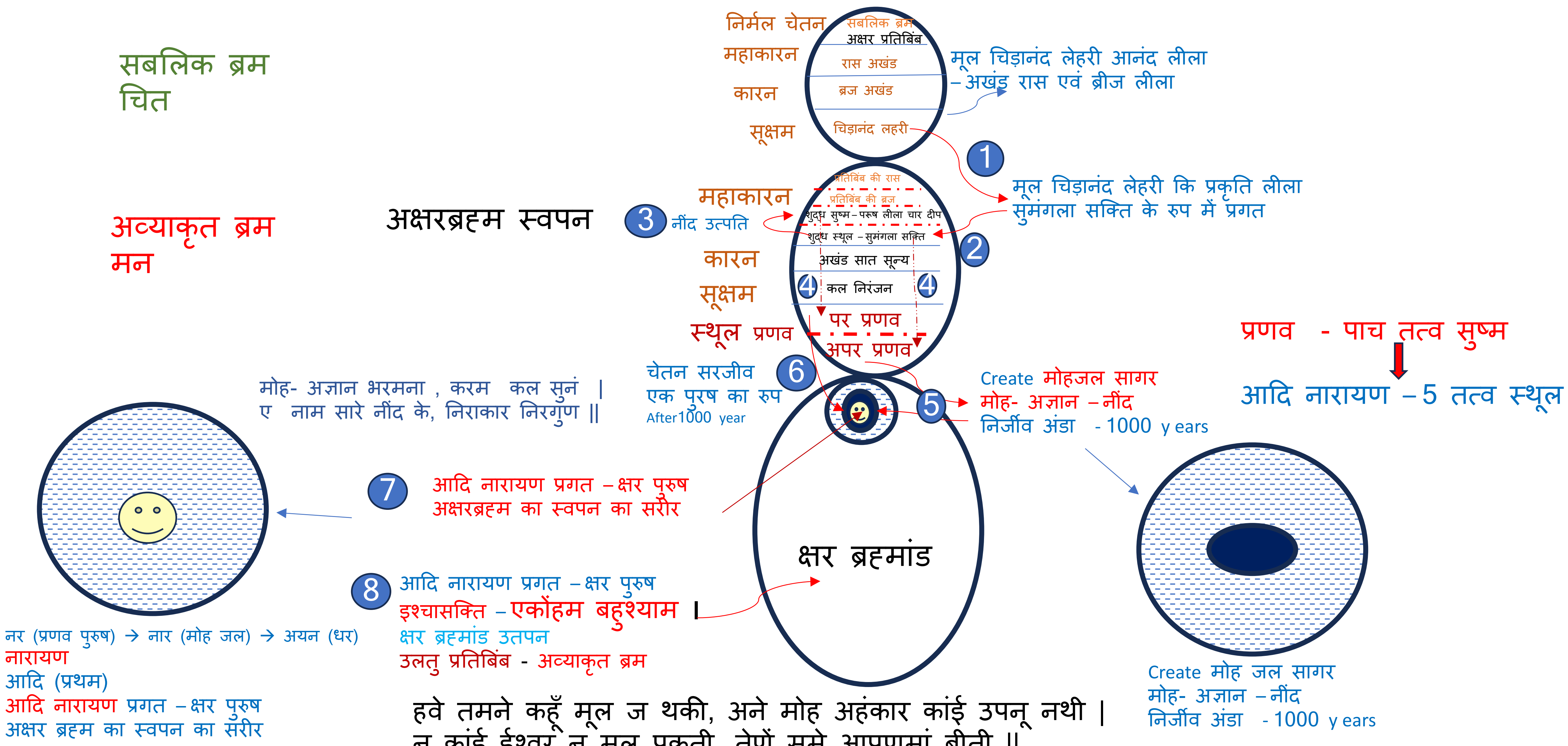

हवे तमने कहूँ मूल ज थकी, अने मोह अहंकार कांई उपनू नथी |
न कांई ईश्वर न मूल प्रकृती, तेणें समे आपणमां बीती ||

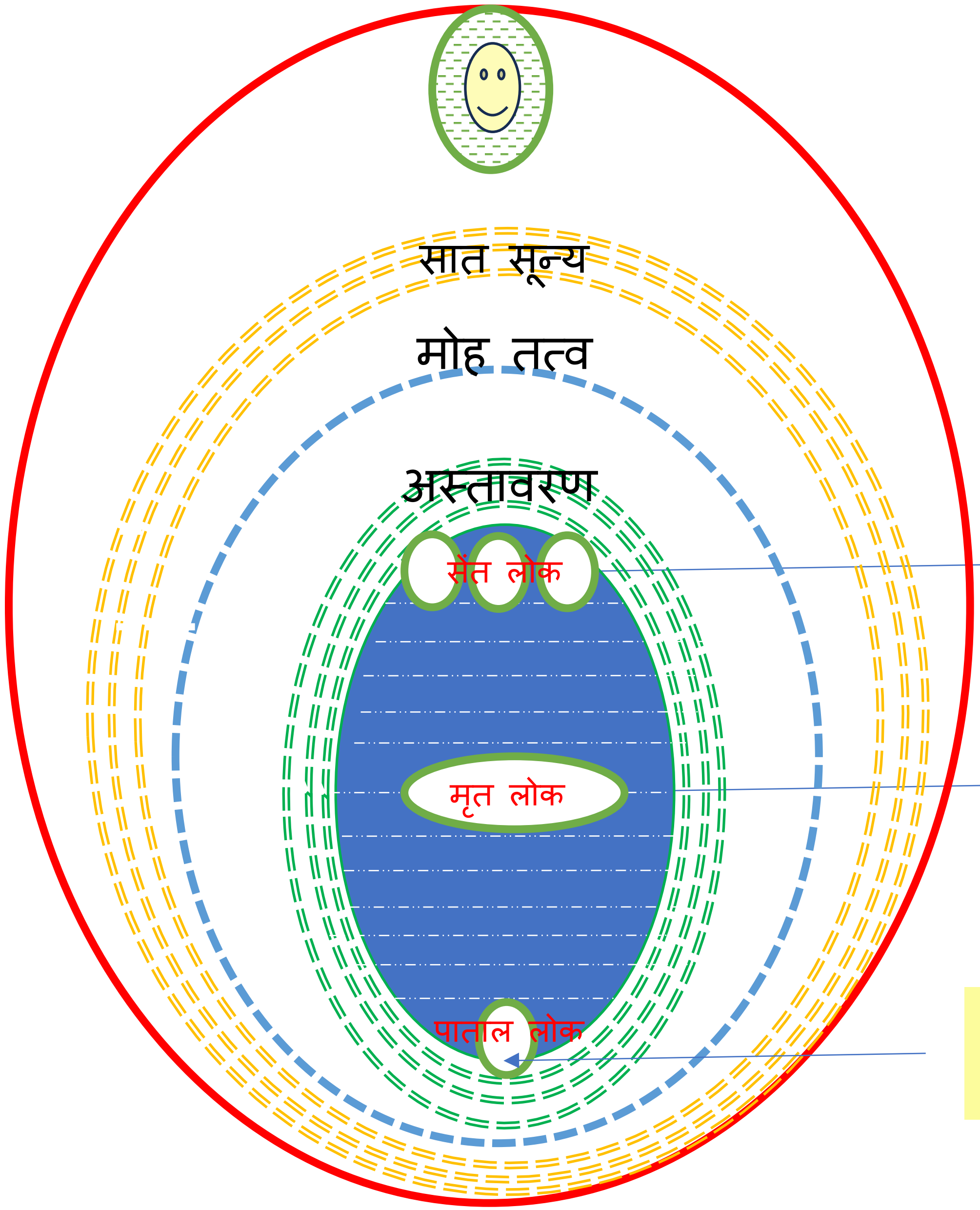

आदि नारायण
माह विष्णु

आदि नारायण का मन

आदि नारायण प्रगत – क्षर पुरुष
इश्चासक्ति – एकोंहम बहुश्याम ।
क्षर ब्रह्मांड उतपन
उलतु प्रतिबिंब - अव्याकृत ब्रम

इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन ।
यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन ॥२४॥
या बिध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार ।
जो अग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर ॥२५॥

सत लोक
त्रि-देव
ब्रमा, विष्णु, शिव

सेष नारायण का मन

14 लोक
मृत लोक

थिर चर सब उतपन

पाताल लोक
सेष नारायण

विराट दर्शन - क्षर ब्रहमांड

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन ॥

ना ईश्वर ना मूल प्रकृति , ता दिन कि कहूँ आपाबीति |
निजलीला ब्रूहम बाल चरित्र , जकी इच्छा मूल प्रकृत ||

मूल प्रकृति मोह अहं थे , उपजे तीनों गुण

5 तत्व

प्रणव - पाच तत्व सुष्म
आदि नारायण – 5 तत्व
सेश नारायण – 5 तत्व
त्रिगुन – 5 तत्व
चौदे लोक – 5 तत्व

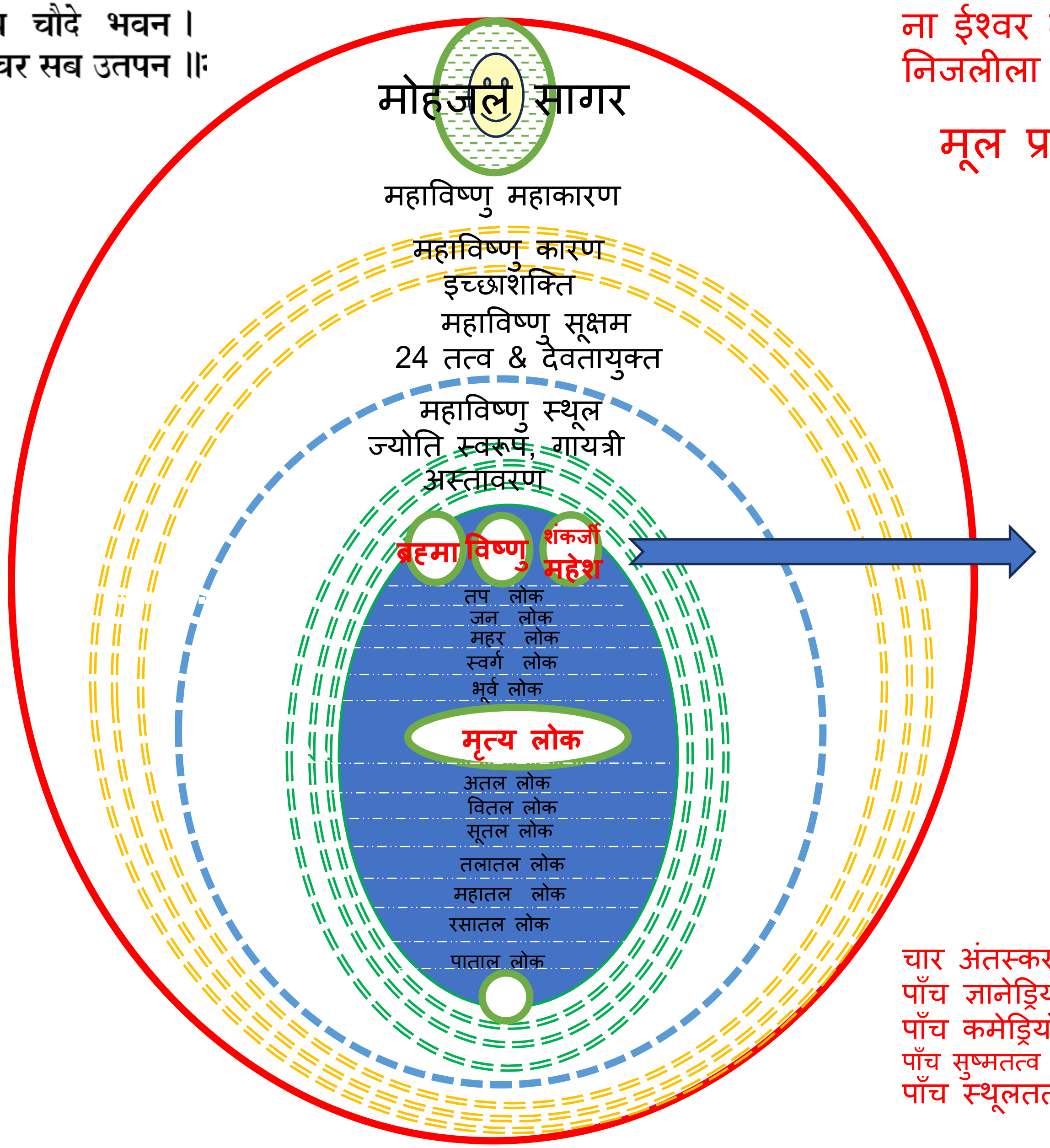

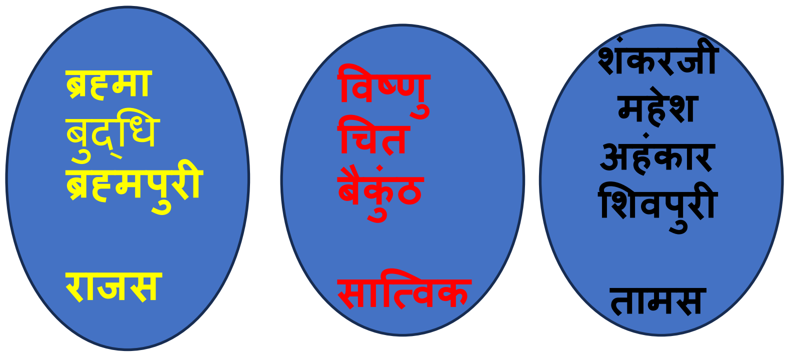

3 गुण
राजस। तामस, सात्विक

24 तत्व

चार अंतस्करन - **मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार**
पाँच ज्ञानेड्रियों - नेत्र, कर्ण, नासिका, जिहवा और त्वचा
पाँच कमेड्रियों – वाक् (मुख), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा) और उपस्थ जननेन्द्रिय)
पाँच सुष्मतत्व - प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान
पाँच स्थूलतत्व - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश

विराट दर्शन - क्षर ब्रह्मांड

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

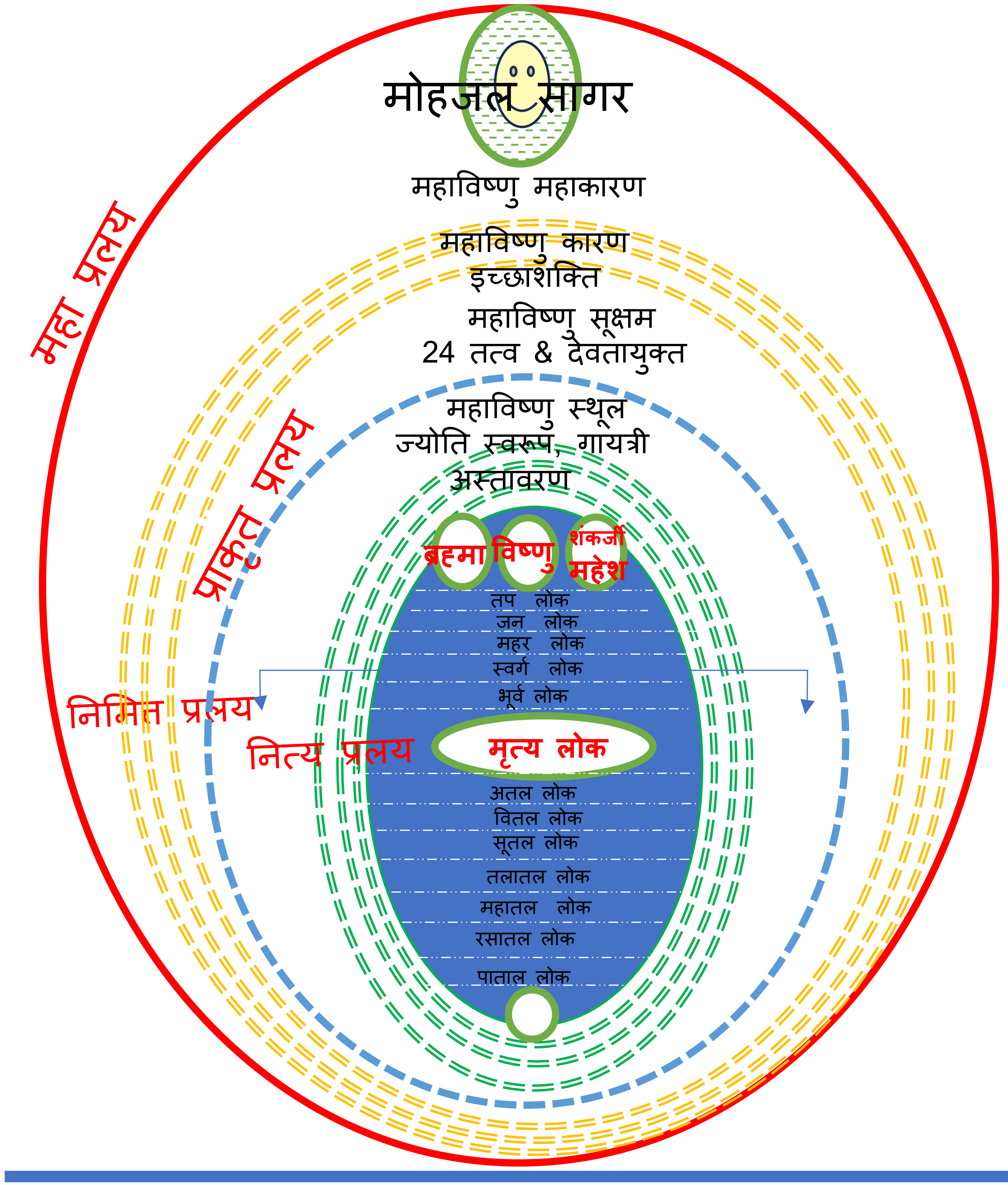

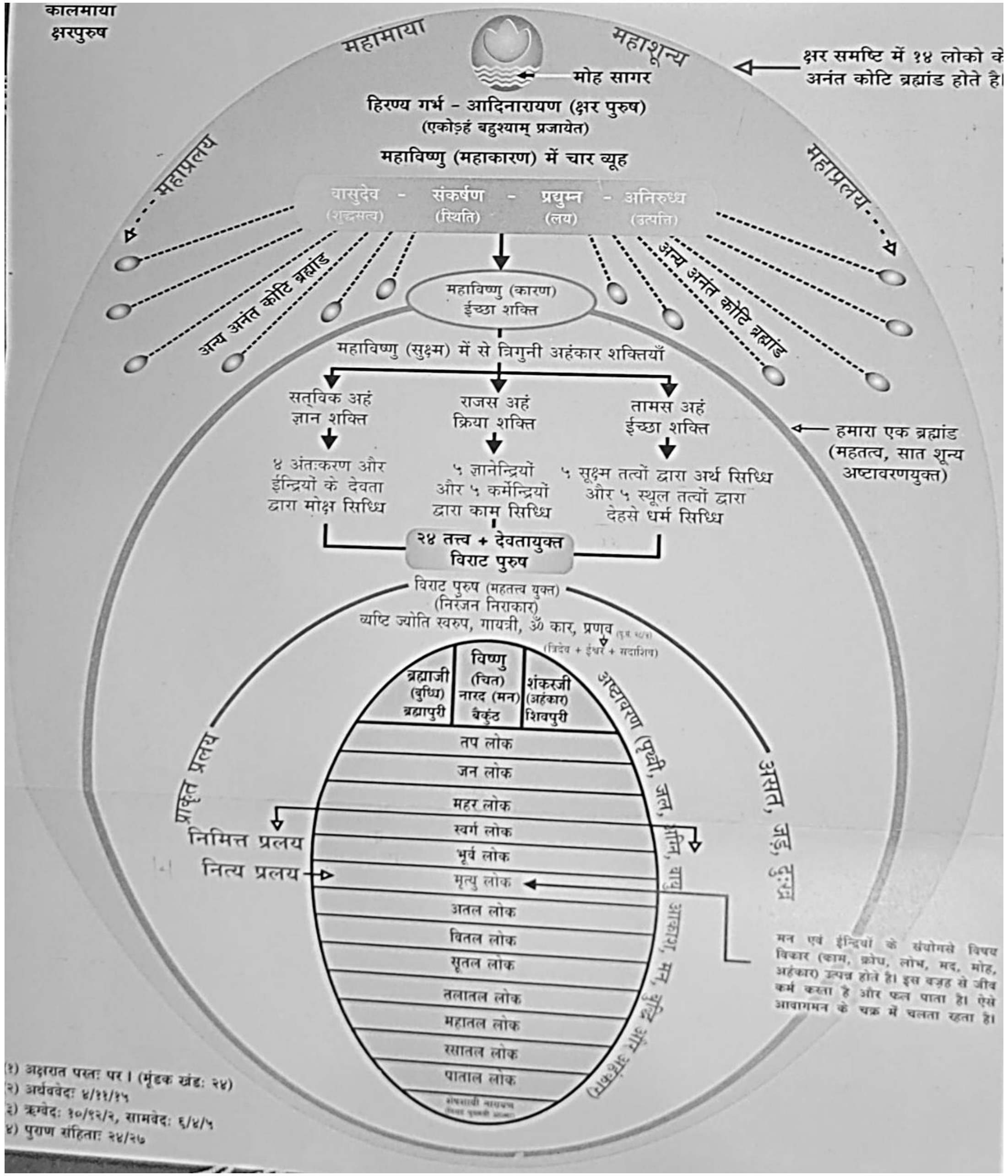

विराट दर्शन - क्षर ब्रहमांड , उलतु प्रतिबिंब of अव्याकृत ब्रम

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

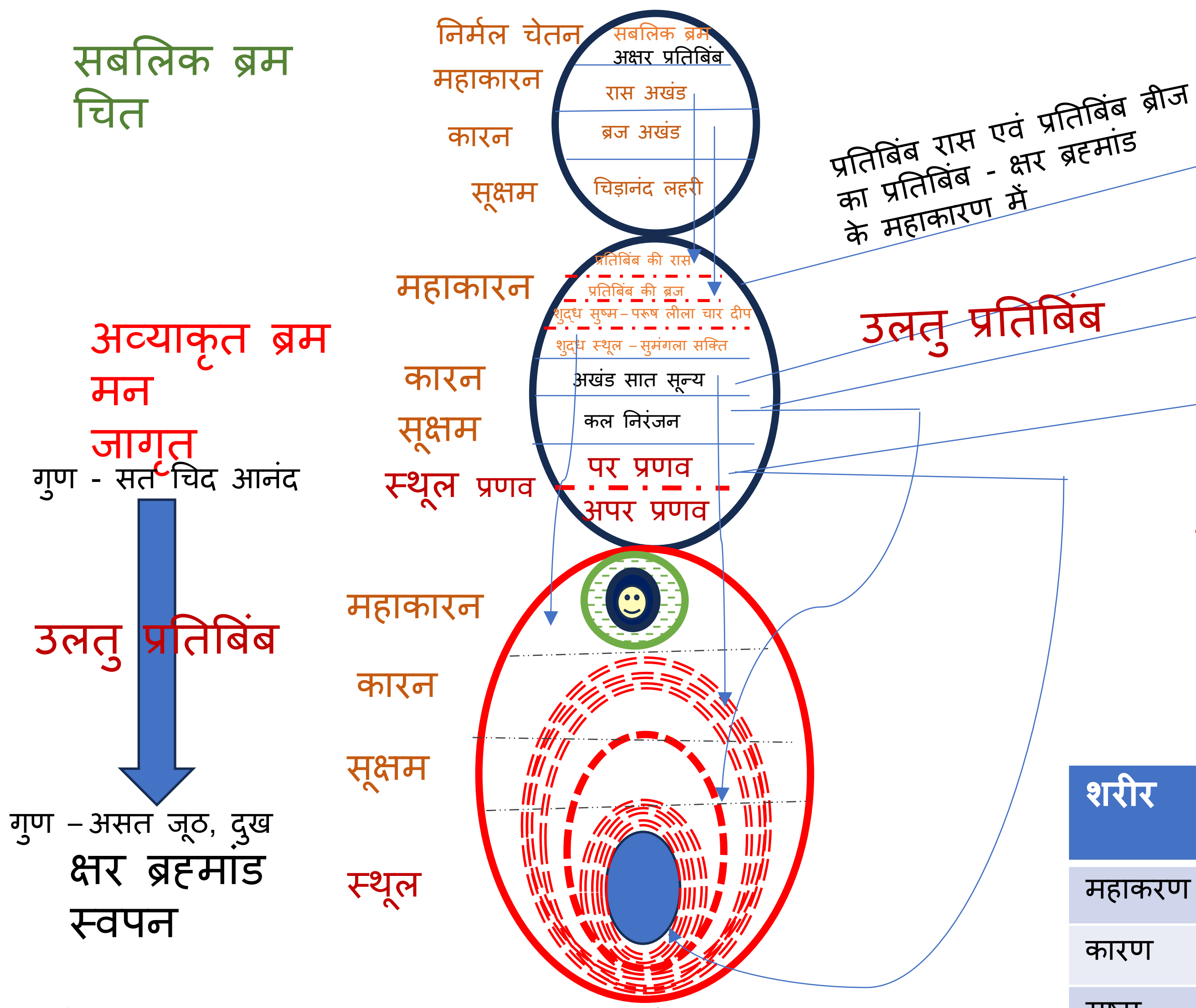

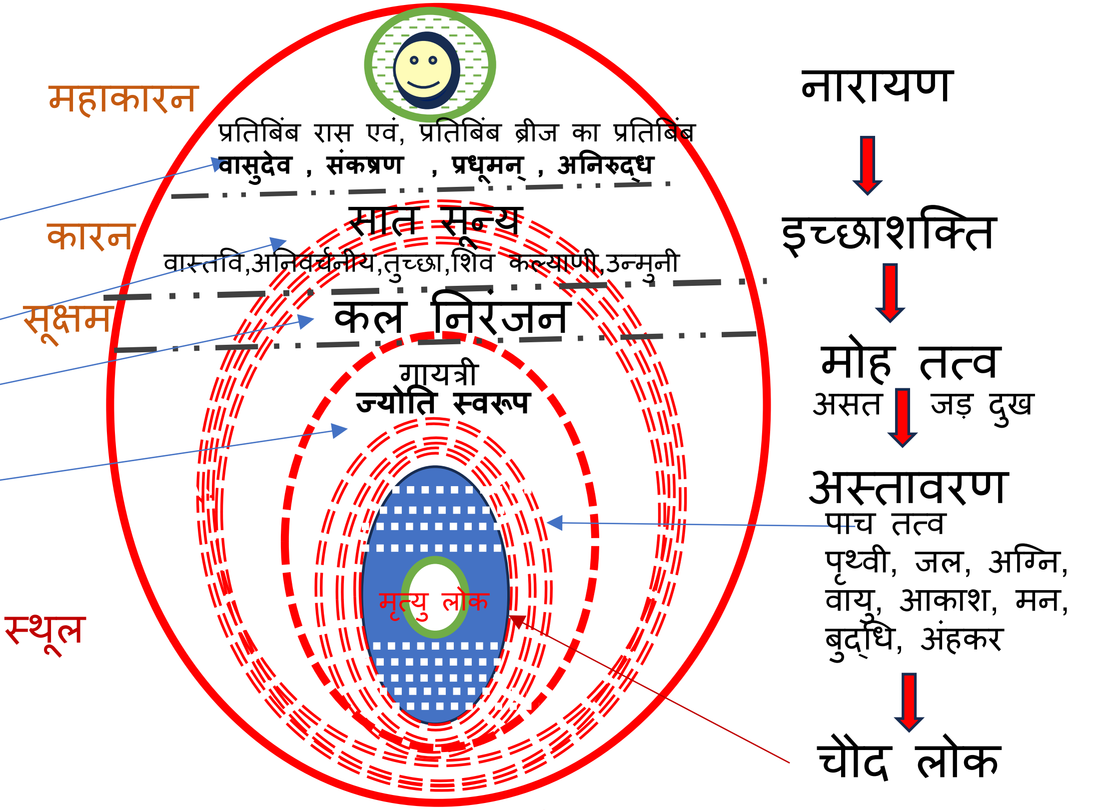

क्षर ब्रहमांड

शरीर	मूल नाम	अवस्था	अंतस्करण
महाकरण	नारायण	तूर्या	मन
कारण	इच्छाशक्ति	सुषुप्ति	चित
सुष्म	मोहतत्व	स्वफ्न	बुद्धि
स्थूल	अंहकार	जगुत	अहं

मोह- अज्ञान भरमना , करम कल सुनं ।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुण ॥

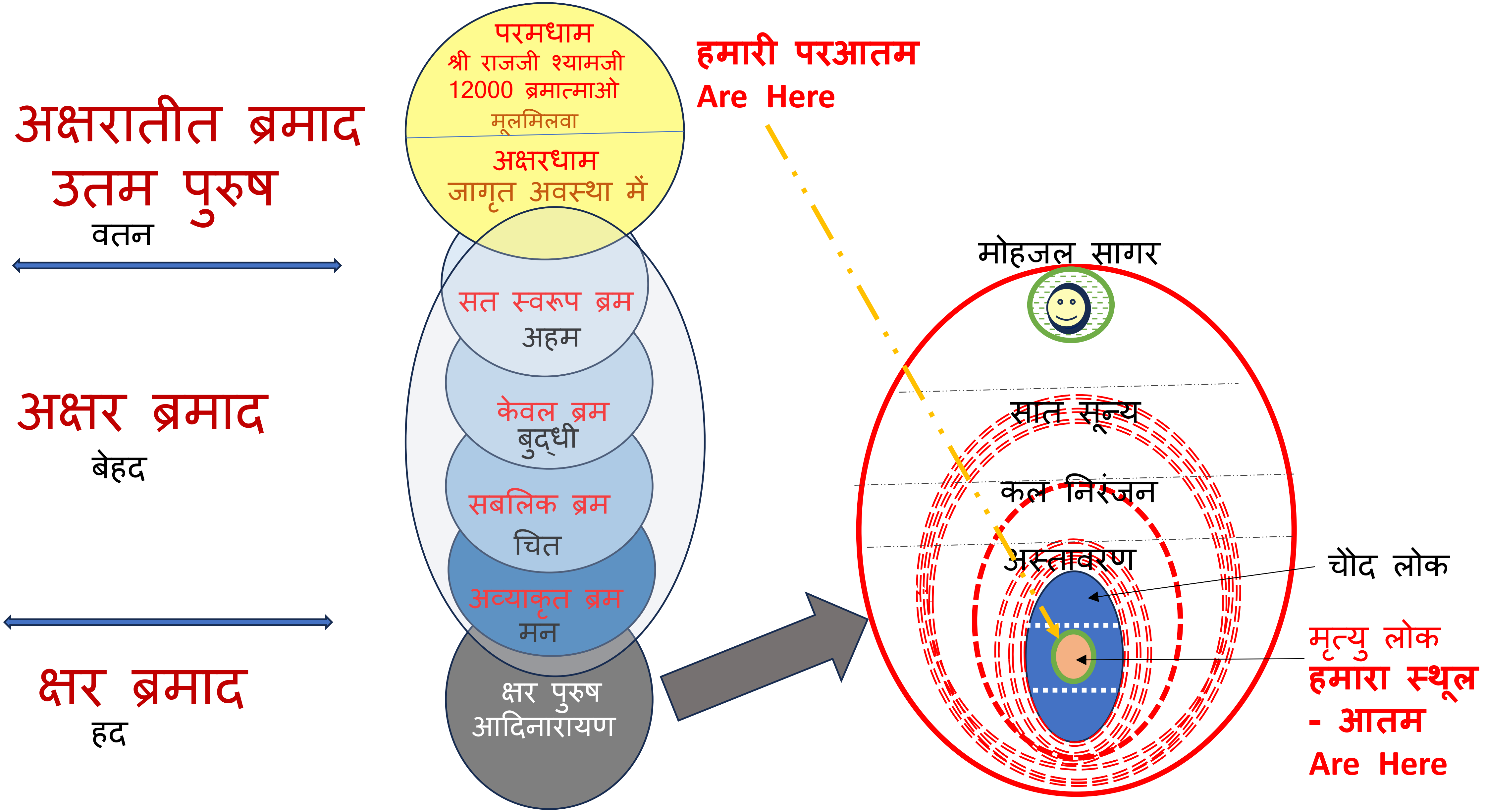
अक्षरातीत ब्रमाद
उतम पुरुष
वतन
अक्षर ब्रमाद
बेहद
क्षर ब्रमाद
हद
परमधाम
श्री राजजी श्यामजी
12000 ब्रमात्माओ
मूलमिलवा
अक्षरधाम
जागृत अवस्था में
सत स्वरूप ब्रम
अहम
केवल ब्रम
बुद्धी
सबलिक ब्रम
चित
अव्याकृत ब्रम
मन
क्षर पुरुष
आदिनारायण
हमारी परआतम
Are Here
मोहजल सागर
सात सून्य
कल निरंजन
अस्तावरण
चौद लोक
मृत्यु लोक
हमारा स्थूल
- आतम
Are Here

विराट दर्शन - क्षर अक्षर अक्षरतीत एवं हमारी लीला स्थान

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

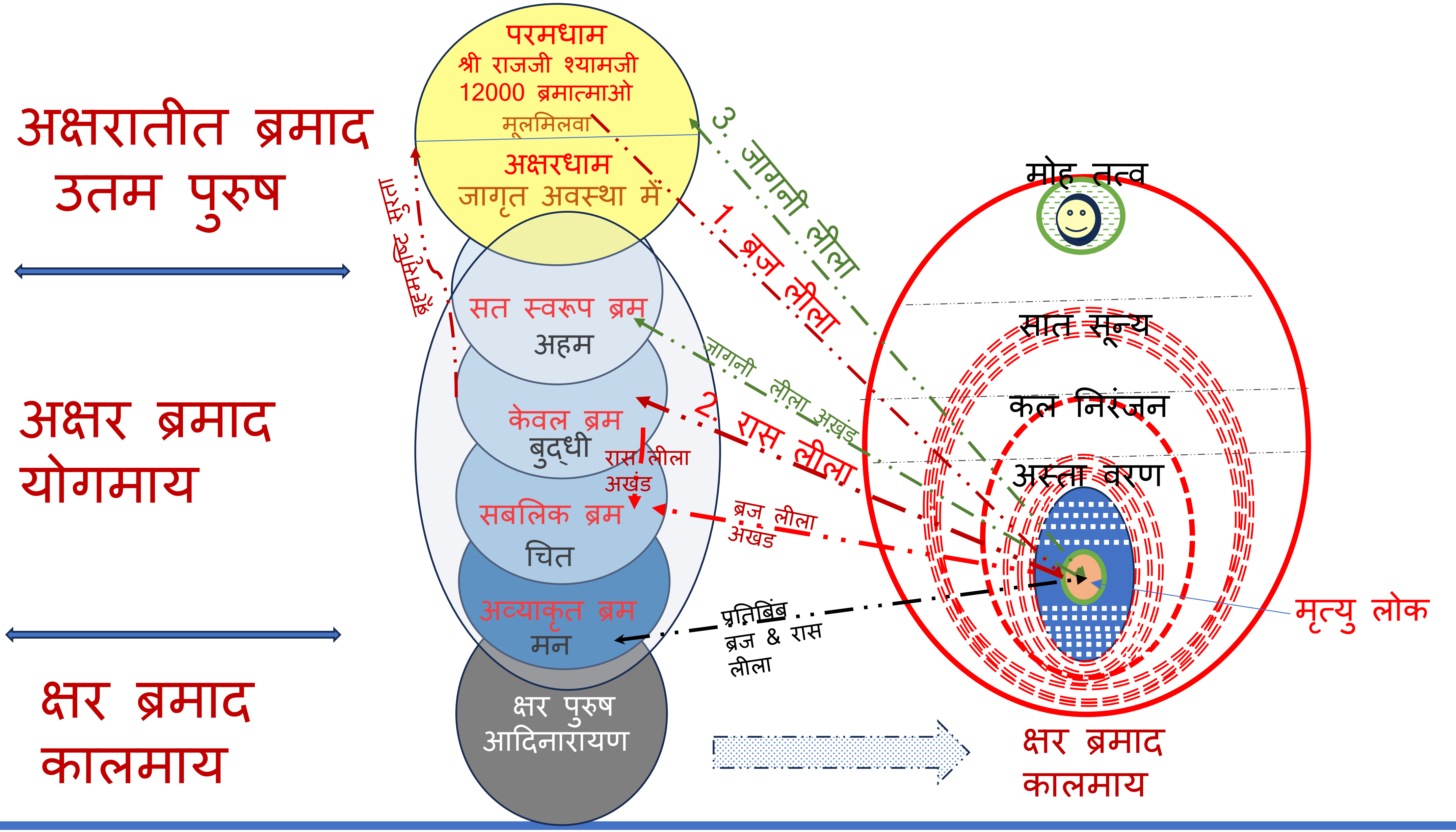

विराट दर्शन - क्षर अक्षर अक्षरतीत एवं लीला का अखंड एवं बहिश्तों का स्थान

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

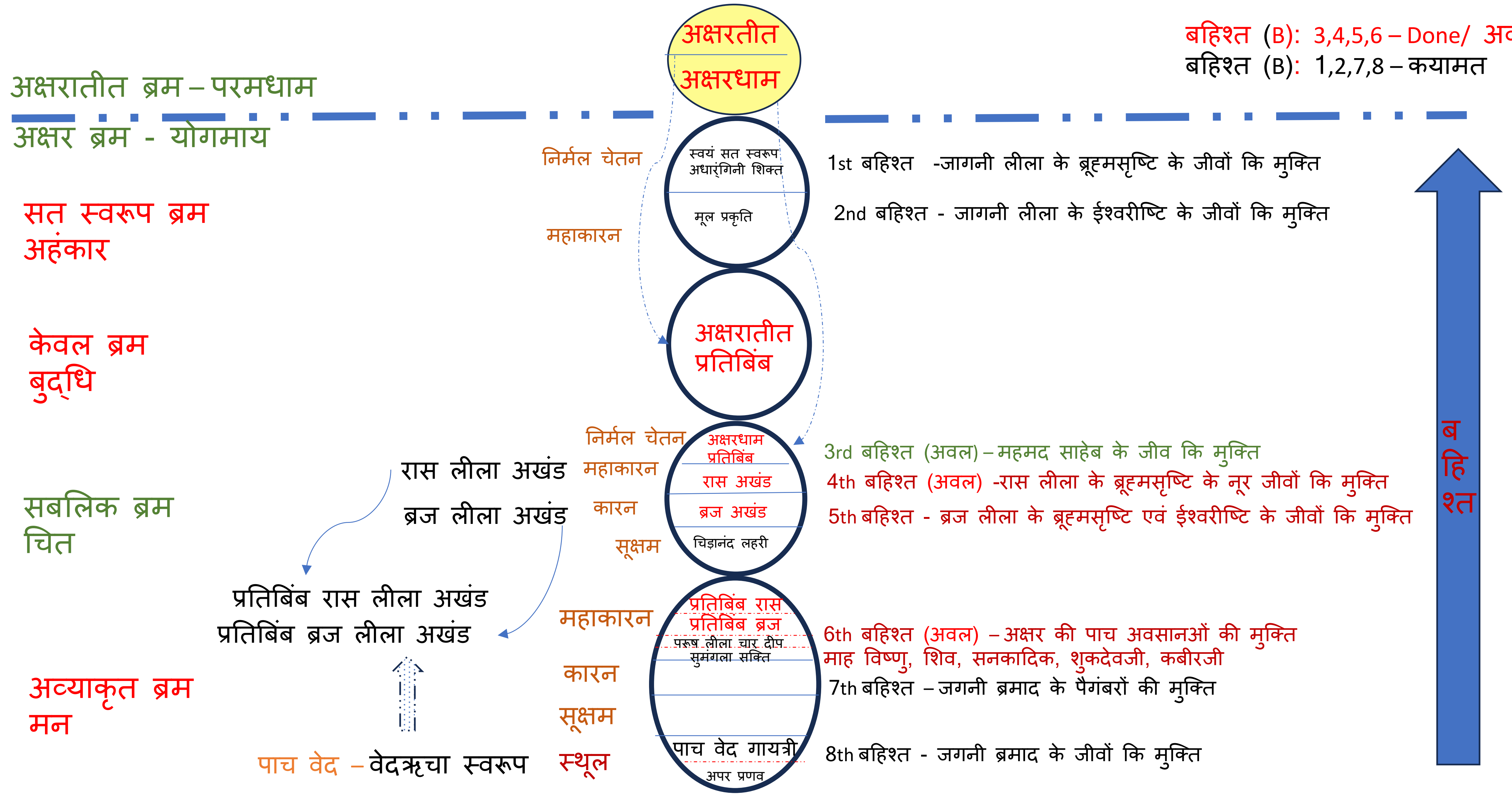

विराट दर्शन - ब्रीज & रास लीला

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

28 ढवापर

अक्षरब्रह्म | परमधाम राजजी | श्यामजी , सखियाँ

ब्रीज लीला
11 Years – लीला
52 Days जूदागी
कालमाया

रास लीला
1 night
योगमाया – केवल ब्रम

राजजी , श्यामजी , सखियाँ

श्री कृष्ण , राधा &
12000 सखियाँ (ब्रजवधु)
विवाहित गोपियों

अक्षरब्रह्म

24000 कुमारिका
कुमारिका गोपियों

राजजी , श्यामजी , सखियाँ
श्री कृष्ण , राधा &
12000 नुरी स्वरूप सखियाँ

अक्षरब्रह्म
24000 कुमारिका
2 कुमारिका on 1 सखि

ब्रीज लीला अखंड
सबलिक कारण

सबलिक महकरण

28 कलयुग

प्रतिबिंब ब्रीज लीला
कालमाया
1 रात्री रास लीला , 7 day गोकुल , 4 day मथुरा

श्री कृष्ण – रास बिहारी
11 दिन

श्री कृष्ण – विष्णु योगेश्वर
100 वर्ष

24000 कुमारिका
सुरंता

12000 वेदऋचा स्वरूप
वेदों के मंत्र
अव्याकृत

अव्यार्कत महकरण
प्रतिबिंब महारास
प्रतिबिंब बृज

विराट दर्शन - जागनी लीला

https://www.youtube.com/watch?v=gFw9d9wJ6Hg&list=PLF2E54BA2FBD2D80B

28 कलयुग

प्रतिबिंब ब्रीज लीला
कालमाया
1 रात्री रास लीला , 7 day गोकुल , 4 day मथुरा

श्री कृष्ण – रास बिहारी
11 दिन

श्री कृष्ण – विष्णु योगेश्वर
112 वर्ष

24000 कुमारिका सुरता

12000 वेदऋचा स्वरूप
वेदों के मंत्र
अव्याकृत

अव्यार्कत महकरण
प्रतिबिंब महारास
प्रतिबिंब बृज

अक्षरब्रह्म | परमधाम राजजी | श्यामजी , सखियाँ

अक्षरब्रह्म
ईश्वरी सृष्टि

राजजी , श्यामजी , सखियाँ
ब्रह्म् सृष्टि

अरब लीला
महमद साहेब
कुरान
बशरी ,

जागनी लीला
देवचन्द्रजी
तारतम
मलकी

जागनी लीला
मेहराज
वाणी
हकी

जागनी लीला

ब्रह्म् सृष्टि & ईश्वरी सृष्टि
सत स्वरूप

जीव सृष्टि - अव्याकृत कल & स्थूल

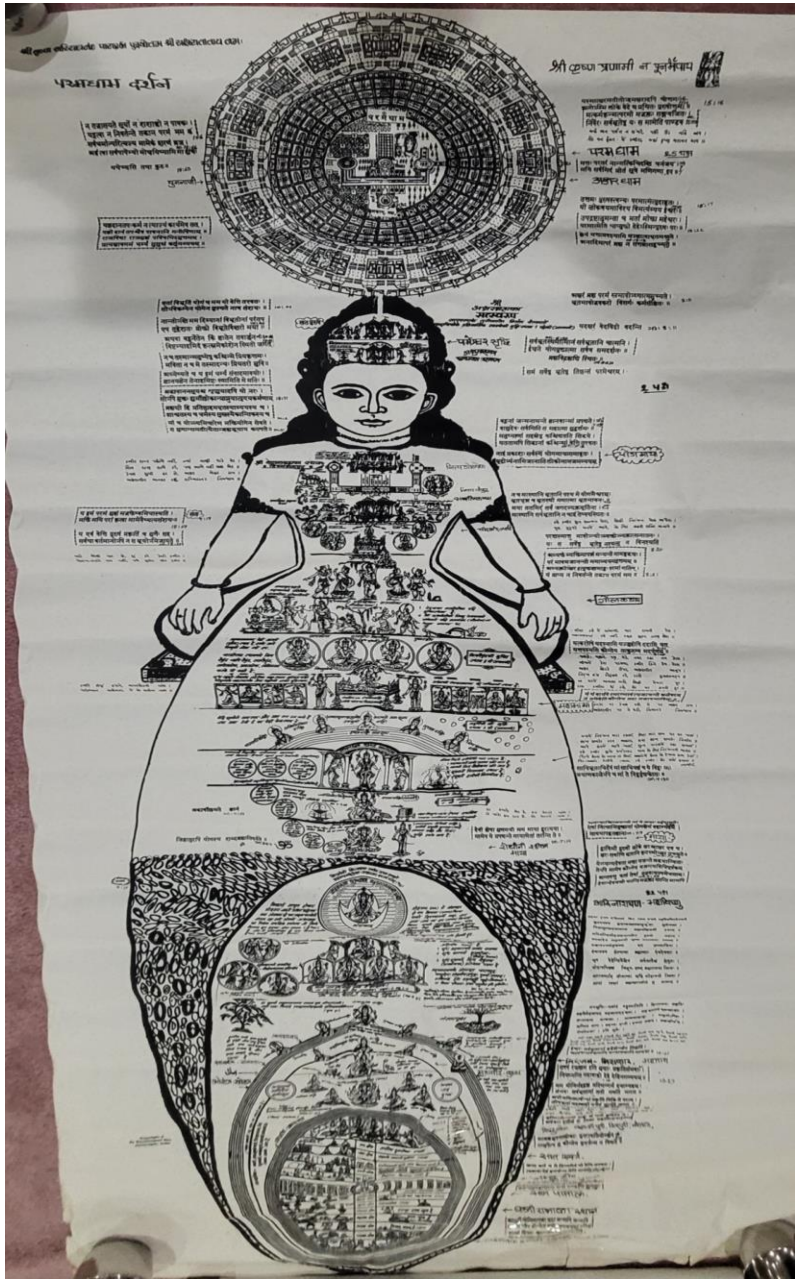

अक्षरातीत ब्रमाद
उतम पुरुष
राजजी, श्यामजी एवं अक्षरब्रह्म

अक्षरब्रह्म का अंतस्करन

अक्षर ब्रह्म का स्वपन क्षर ब्रमाद

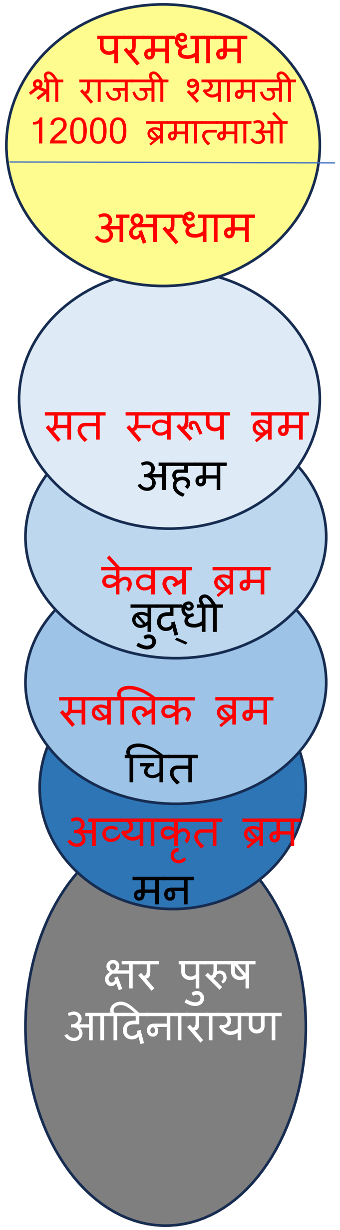

विराट दर्शन

https://nijanand.org/virat-patdarshan-वेरात-पट-दर्शन

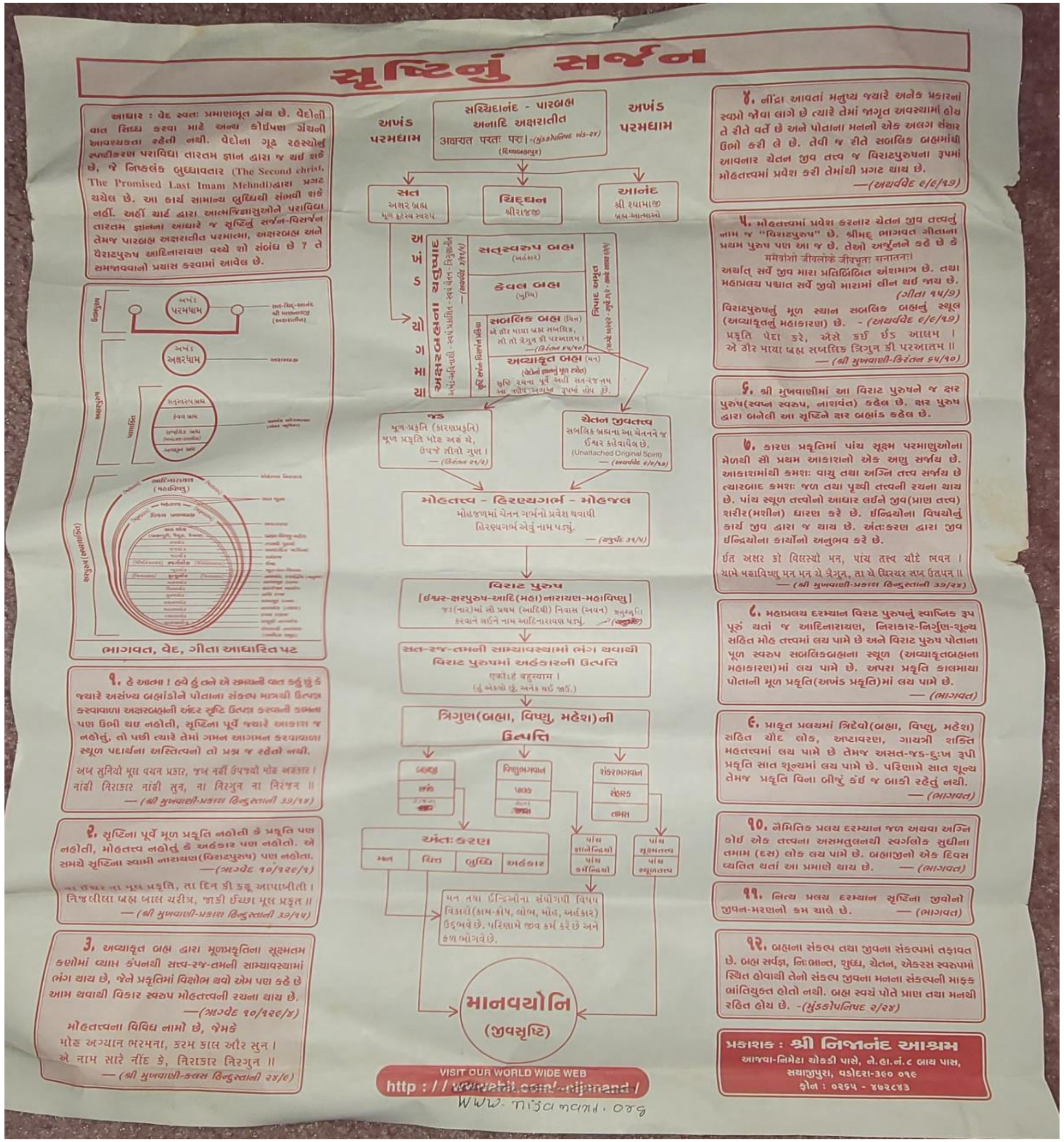

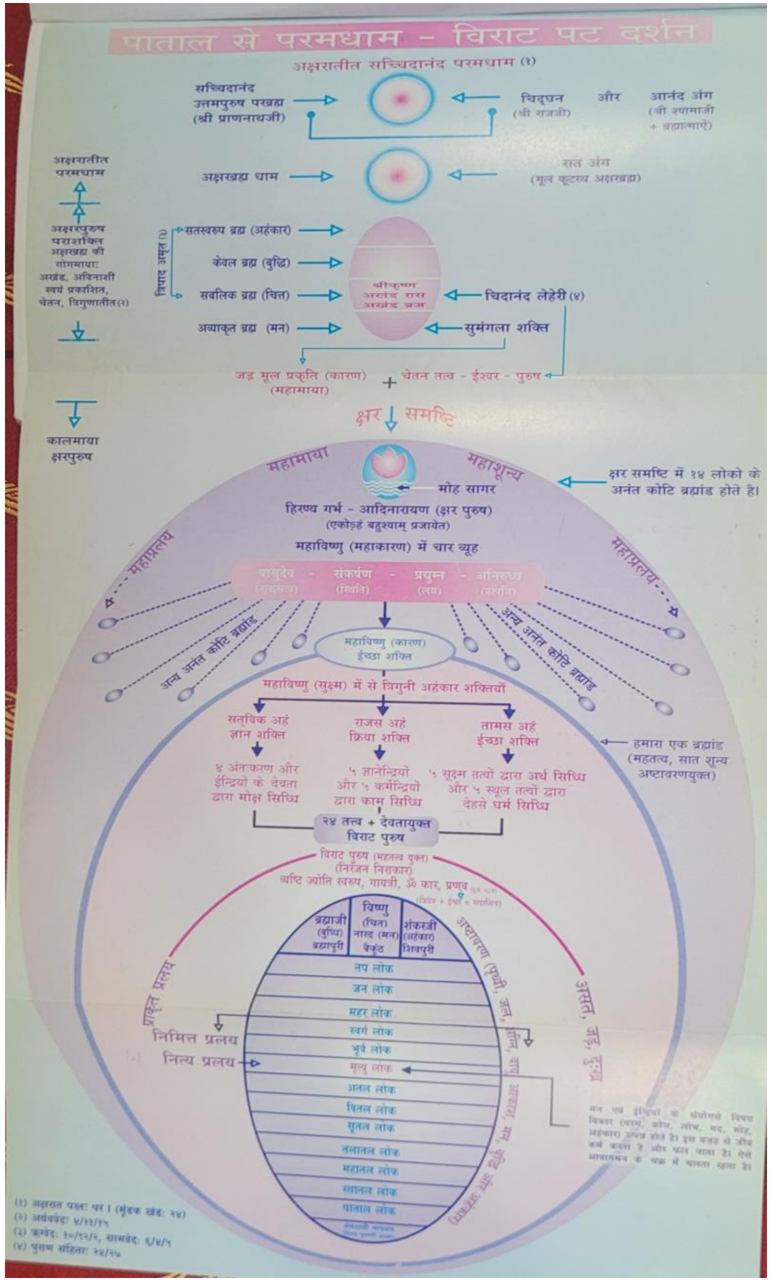

Sada Anand Mangal Mein Rahiye

Prayer for True Happiness and Total Wellbeing: For Me, for you and for All

Sada Anand Mangal Mein Rahiye,
Sada Anand Mangal Mein Rahiye | 1

Maha prasaad Aur Charnamrut,
Eh Sukh Sath Mein Payiye || 2

Ishak Surahi Prem Ka Pyala,
Andar Atman Chhaki Rahiye | 3

Tan Sovey Rooh Nish Din Jagey,
Dham Dhani Ke Charno Rahiye || 4

Ashta Pohor Din Chausath Ghadiyan,
Nishdin Piyu Piyu Piyu Kahiye | 5

Chhatrasal Bhajo Dham Dhaniji Ko,
Aur Devan Saun Kya Chahiye || 6

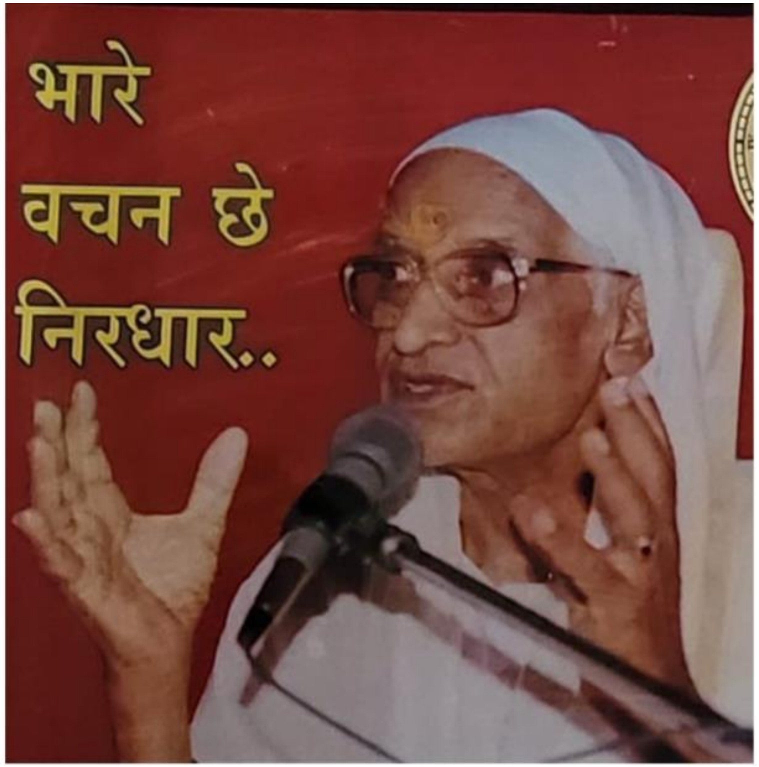

Pranamji – प्रणामजी

https://nijanand.org/wp-content/uploads/2026/05/Shri-Bitak-Sahib.pdf

https://nijanand.org/shri-bitak-saheb-hindi-pujay-sarkarsri/

https://youtu.be/gFw9d9wJ6Hg?si=7XHMDgnrcNuI9oOU